आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक : 10 बीकानेर, जून, 2016 मूल्य : ₹ 2.00

कुलपति की कलम से.....

देश की पहली कामधेनू शोध पीठ वेटरनरी विश्वविद्यालय में होगी स्थापित

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

देश में अपनी किस्म की पहली कामधेनू शोध पीठ की स्थापना वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर मुख्यालय पर की जाएगी। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा इस आशय के प्रस्ताव राज्य सरकार को भिजवाये गए थे। हाल ही में जयपुर में माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे की अध्यक्षता में हुई उच्चस्तरीय बैठक में इस पीठ की स्थापना हेतु निर्णय लिया गया तथा शोधपीठ का व्यय राष्ट्रीय कृषि विकास योजना से वहन किया जाएगा। प्रस्तावित शोध पीठ में स्वदेशी गौवंश से संबंधित तमाम प्रकार के अनुसंधान तथा विकासात्मक गतिविधियों को समन्वित रूप में किया जा सकेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पूर्व में ही राज्य की छह देशी गौवंश के संवर्द्धन और विकास के लिए अलग–अलग पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर कार्य किया जा रहा है, इससे शोध कार्यों को गति मिलेगी। हमारी संस्कृति में गौमाता कामधेनू को एक देवता के रूप में मान्यता मिली हुई है और यह ग्रामीण जनजीवन में आर्थिक समृद्धि का आधार है। विश्वविद्यालय में चल रहे गौ संवर्द्धन और संरक्षण से राज्य में पाई जाने वाली विभिन्न देशी गौवंश से 25–26 लीटर दूध प्रतिदिन तक प्राप्त करने में वैज्ञानिकों को सफलता मिली है। ढाई वर्ष की बछड़ी को भी दुग्ध उत्पादन के लिए तैयार कर लिया गया है। देशी गौवंश में दो ब्यांतों के अन्तर को भी कम करके एक साल तक लाया जा रहा है। कामधेनू शोध पीठ की स्थापना से अनुसंधान और शोध में समन्वय के साथ प्रभावी काम को गति मिलेगी। शोध पीठ में अत्याधुनिक वैज्ञानिक तकनीक (इन विट्रो फर्टिलाईजेशन), पंचगव्य की उपयोगिता और दूध के बेहतर उपयोग को भी सुनिश्चित करने के लिए तीन प्रयोगशालाएं स्थापित की जाएगी। गोबर के विविध प्रयोग से ऊर्जा (बायोगैस), हरा चारा उत्पादन जैसे कार्यों को भी प्रोत्साहन दिया जाएगा। शोध पीठ के तहत गौपालकों को उन्नत प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण केन्द्र भी शुरू किया जाएगा। इसी के साथ मैं, वेटरनरी विश्वविद्यालय के छठे स्थापना दिवस के अवसर पर सभी पशुचिकित्सकों और पशुपालकों को हार्दिक बधाई देता हूँ। विश्वविद्यालय अपने शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार कार्यों से पशुपालन के सुदृढ़ीकरण के लिए निरंतर प्रयासरत है और आगे भी प्रयासरत रहेगा, ऐसी मेरी कामना है।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे द्वारा 13 मई, 2016 को ''राजुवास द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में सच होते सपने'' प्रकाशन का जयपुर में विमोचन

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

मुख्य समाचार

आई.सी.ए.आर. के उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) ने किया राजुवास का अवलोकन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) डॉ. एच. रहमान ने 16 मई, 2016 को वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशुचिकित्सा के क्षेत्र में चल रहे अनुसंधान कार्यों का अवलोकन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने राजुवास द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न पशुचिकित्सा उपचार सेवाओं और पशु विज्ञान अनुसंधान कार्यों से अवगत करवाया। उपमहानिदेशक डॉ. एच. रहमान ने विश्व विद्यालय के जैव तकनीकी विभाग की विभिन्न प्रयोगशालाओं में चल रहे अनुसंधान कार्यों का जायजा लिया। एपेक्स सेन्टर में पशुचिकित्सा विज्ञान में वेट और पेरावेट के प्रशिक्षण कार्यों की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने पशुपोषण विभाग में चारे की गुणवत्ता जांच प्रयोगशाला में उच्च तकनीकी से किए जा रहे कार्यों को देखा। पशुपालकों और कृषकों के प्रशिक्षण के लिए स्थापित हरे चारे की हाइड्रोपोनिक्स तकनीक तथा अजोला उत्पादन की तकनीक को उपयोगी बताया। उपमहानिदेशक ने विश्वविद्यालय की पशु चिकित्सा उपचार की उन्नत तकनीक और सेवाओं को देश में उच्च कोटि का बताकार सराहना की। डॉ. रहमान ने कुक्कुटशाला में जैव विविधिकरण सजीव म्यूजियम का भी अवलोकन कर पशु–पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों के पालन और उत्पादन की जानकारी ली। उपमहानिदेशक ने विश्वविद्यालय में इन्टर्नशिप कर रहे छात्र/छात्राओं से मुलाकात भी की।

बकरी आधारित आजीविका कार्यक्रम का मूल्यांकन करेगा राजुवास

पश्चिमी राजस्थान में बकरी पालन से पशुपालकों के आर्थिक उन्नयन के लिए राज्य सरकार की एम. पावर परियोजना एवं सेन्टर फॉर माइक्रोफाइनेन्स की 291 करोड़ रूपये लागत की परियोजना के मूल्यांकन का कार्य वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा। राजस्थान सरकार द्वारा इन्टरनेशनल फंड फॉर एग्रीकल्चर डवलपमेन्ट और टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से चलाई जा रही इस परियोजना का क्रियान्वन सेन्टर फॉर माइक्रोफाइनेन्स (एन.जी.ओ.) द्वारा जोधपुर संभाग के 6 अत्यंत पिछड़े विकास खंडों में किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत की अध्यक्षता में परियोजना के प्रभावी मूल्यांकन के लिए जोधपुर में 18 मई को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारीगण और परियोजना क्रियान्वयन की एजेन्सी सेन्टर ऑफ माइक्रोफाइनेन्स और एम.पावर के परियोजना अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में मूल्यांकन हेतु कार्य विधि को अन्तिम रूप दिया गया। कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा किया गया। इस अवसर पर एम. पॉवर के परियोजना अधिकारी श्री जयपाल सिंह मेड़तिया, कुलपति के विशेषाधिकारी डॉ. उमेश अग्रवाल, सेन्टर फॉर माइक्रोफाइनेन्स के मैनेजर रूबाब आजम, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, कन्सलटैन्ट डॉ. अलका अवस्थी व राजुवास के छह वी.यू.टी.आर.सी. के प्रभारी अधिकारी व टीचिंग एसोसिएट सहित 13 स्वयंसेवी संस्थानों के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

राजुवास में पशुओं के नेत्र शल्य चिकित्सा ऑपरेशन थिएटर का उद्घाटन

राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री शंभूदयाल बड़गुजर ने 30 मई को को वेटरनरी विश्वविद्यालय के टीचिंग वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स (चिकित्सालय) में छोटे पशुओं की नेत्र शल्य चिकित्सा के अत्याधुनिक ऑपरेशन थिएटर का उद्घाटन किया। उन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर पशुचिकित्सा और उपचार की अत्याधुनिक सेवाओं के लिए कुलपति प्रो. कुलपति को बधाई देते हुए कहा कि आज से ही छोटे पशुओं के नेत्र की शल्य चिकित्सा में एक नया अध्याय शुरू हो गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि पशु शल्य चिकित्सा में पशुओं की आंखों का उपचार फैको पद्धति से बिना चीर फाड़ के कर सकेंगे। इसमें मानव चिकित्सा के समकक्ष आप्थेलमिक माइक्रोस्कोप से मोतियाबिंद और इलेक्ट्रो रेटिनोग्रामी मशीन से आंखों के गंभीर रोगों का भी उपचार कर सकेंगे। आई.सी.ए.आर. की "डिमस्का" योजना के तहत देश के 4 पशुचिकित्सा केन्द्रों में यह सुविधा शुरू की गई है। वेटरनरी विश्वविद्यालय में 4 करोड़ रू. लागत से इस सुविधा को शुरू किया गया है। पशु चिकित्सालय के अधीक्षक डॉ. प्रवीण बिश्नोई और नेत्र यूनिट प्रभारी डॉ. एस.के. झीरवाल ने नेत्र शल्य चिकित्सा कक्ष की कार्यप्रणाली से अवगत करवाया।

राज्य नॉडल अधिकारी डॉ. एस.एल. जाट द्वारा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के कार्यों का निरीक्षण

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के राज्य नॉडल अधिकारी एवं संयुक्त निदेशक कृषि डॉ. एस.एल. जाट ने 18 मई को वेटरनरी विश्वविद्यालय में चल रही विभिन्न परियोजनाओं का निरीक्षण कर प्रगति का जायजा लिया। वर्तमान में वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर और वल्लभनगर (उदयपुर) में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 17 परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है। डॉ. जाट ने हिस्टो पैथोलॉजी और हाइटेक प्रयोगशाला में उन्नत माइक्रोस्कोपी कार्यों का जायजा लिया। डॉ. जाट ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा मुर्गी की ब्लेक एस्ट्रालॉप और कड़कनाथ के क्रॉस से विकसित "राजुवास स्ट्रेन" एवं आर.के.वी.वाई. में तैयार पशु विविधिकरण सजीव मॉडल का अवलोकन किया। संयुक्त निदेशक ने विश्वविद्यालय परिसर डेयरी में चल रही राठी गौनस्ल के संवर्द्धन कार्यों, तथा माइक्रोबायेलॉजी एवं बायोटेक्नोलॉजी इन्फरमेटिक्स सिस्टम की नेटवर्क परियोजना को देखा। उन्होंने पशु आहार और चारा जांच की उन्नत तकनीकी प्रयोगशाला, हाइड्रोपोनिक्स तकनीक और अजोला हरा चारा उत्पादन कार्यों का जायजा लिया। पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर में कांकरेज और साहीवाल गौवंश के पालन और अनुसंधान कार्यों, तथा सेवण घास और हरे चारे उत्पादन के लिए इन्दिरा गांधी नहर से केन्द्र को पानी मुहैय्या करवाने की परियोजना में बनी डिच माइनर और डिग्गी कार्यों का भी अवलोकन किया। पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल में थारपारकर गौवंश पालन और हरे चारे के उत्पादन कार्य को देखा। उन्होंने सभी परियोजनाओं के प्रमुख अन्वेषकों से कार्यों की विस्तृत जानकारी ली। नोडल अधिकारी ने 19 मई को वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ़ की कार्य विधि का भी अवलोकन किया।

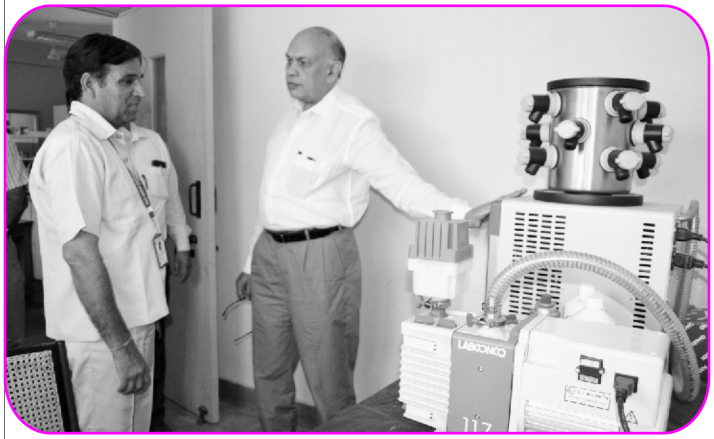

सीकर जिले के 80 कृषक–पशुपालकों का भ्रमण

सीकर जिले के 80 कृषक और पशुपालकों का एक दल भ्रमण के लिए 3 मई, 2016 को वेटरनरी विश्वविद्यालय पहुँचा। दल में लक्ष्मणगढ़ (सीकर) के प्रगतिशील कृषक, पशुपालक और स्वंय सहायता समूहों के सदस्य भी शामिल थे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र में हाइड्रोपोनिक्स तकनीक और अजोला हरा चारे के उत्पादन कार्यों, पशुओं के रोग निदान और उपचार की आधुनिक तकनीक तथा औषधीय विभाग में पशुओं के वार्ड व उपचार कार्यों का भी अवलोकन किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने विश्वविद्यालय की पशुपालकों के कल्याण कार्यक्रमों की जानकारी देकर मुद्रित पशुपालन प्रकाशन भी प्रदान किये।

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा विशाल पशु बांझपन निवारण चिकित्सा शिविरों का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु मादा एवं प्रसूति रोग विभाग के विशेषज्ञ चिकित्सकों के द्वारा 8 मई को सुरनाणा और 22 मई को कालू गांव में पशु बांझपन निवारण शिविरों में 182 पशुओं की जांच और उपचार कर पशुपालकों को राहत पहुँचाई। ये शिविर महावीर इन्टरनेशनल, बीकानेर और जगदम्बा भक्त मंडल, कालू के तत्वावधान में आयोजित किये गये। इस अवसर पर पशुपालकों की गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय का प्रयास है कि पशुधन स्वस्थ और अधिक दुग्ध उत्पादन देने वाला बने। इससे पशुपालकों को अधिक मुनाफा मिले और वे इस व्यवसाय को पूरी शिद्दत के साथ अपनाएं। शिविर में पशु मादा एवं प्रसूति रोग विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जे.एस. मेहता के नेतृत्व में 11 पशुचिकित्सा विशेषज्ञों ने अपनी सेवाएं प्रदान की। महावीर इन्टरनेशनल की जिला इकाई अध्यक्ष मालेश जैन, सचिव संतोष जैन और सी.के. जैन और माता भक्त मण्डल के मालाराम जोशी, जवरीमल बोथरा और हरिप्रकाश जैन ने सहयोग किया।

मेलों में आपदा प्रबंधन पर कार्यशाला

राजस्थान राज्य मेला प्राधिकरण, जयपुर द्वारा मेलों में आपदा प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 12 मई, 2016 को वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन केन्द्र में किया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री महेन्द्र शर्मा, जिला सत्र न्यायाधीश (परिवार) थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में वेटरनरी कॉलेज अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, प्रो. टी.के. गहलोत, डॉ. प्रवीण बिश्नोई व मेला प्राधिकरण के मुख्य सुरक्षा अधिकारी श्री एम.ए जैदी (अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक) उपस्थित थे। मेला प्राधिकरण के अधिशाषी अभियन्ता श्री आर.एल. जाट ने आपदा प्रबंधन की महत्त्ता तथा मॉडल प्रबंधन योजना की जानकारी प्रतिभागियों को दी। इस कार्यशाला में संभाग के बीकानेर, चूरू, हनुमानगढ़ व श्रीगंगानगर जिलों के देवस्थान, पशुपालन, पर्यटन, चिकित्सा, आपदा प्रबंधन प्रशासनिक विभाग के अधिकारियों, किसानों व पशुपालकों सहित कुल 75 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी. चूरू द्वारा 133 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 6, 9, 13, 24 एवं 26 मई, 2016 को गांव लिछमापुरी, लोहा, चांदगोठी, ढ़ाका का बास, देपालसर एवं सेहनाली बड़ी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं पशु विज्ञान संवाद का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 133 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया-लाडनू में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (लाड़नू) द्वारा 7, 12 एवं 24 मई, 2016 को गांव दुजार, दुदोली एवं ढ़ाकरियावास में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 10 मई को ऑन केम्पस प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 109 पशुपालकों ने भाग लिया।

।। कोई व्यक्ति अपने कार्यों से महान होता है, अपने जन्म से नहीं ।।

कुम्हेर में 120 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 5, 13, 18, 24 एवं 31 मई, 2016 को गांव सुंदरावली, गिरधरपुरा, थोथा, बावेन एवं पानोरी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 120 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 25 एवं 26 मई, 2016 को गांव देवली (भासी) एवं हरभगतपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 81 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी. डूंगरपुर द्वारा 119 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 5, 19, 23 एवं 27 मई, 2016 को गांव ढोलका, अमलीफूला, माण्डेला एवं मण्डेलाउपली में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 119 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिराही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9, 15 एवं 19 मई, 2016 को गांव खाम्बल, बालदा एवं मांडवा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 56 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 157 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 11, 17, 26 एवं 30 मई, 2016 को गांव धर्मपुरा, बड़गांव, कासीमपुरा, चारचोमा एवं देवपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 157 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 27 मई, 2016 को कड़ेल गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 25 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किसानों एवं पशुपालकों को प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 20 मई को परलीका एवं 30 मई को रामगढ़ गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक एवं कृषक प्रशिक्षण शिविर में 58 कृषकों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी सूरतगढ़ केन्द्र में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा 11–13 एवं 16–18 मई, 2016 को केन्द्र परिसर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में 23 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुंदा (चित्तौड़गढ़) में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा द्वारा 23, 28 एवं 31 मई, 2016 को गांव मांगरोल, सतकंडा एवं रावलिया गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में 62 पशुपालकों ने भाग लिया।

संरक्षित करें अपनी देशी गाय

हमारे देश में पशुओं की विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं। जिसमें देशी–विदेशी सब प्रकार की नस्लें पाई जाती हैं। वर्तमान परिपेक्ष में देखा जाए तो गाय की देशी नस्ल के संरक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो कि शत–प्रतिशत उचित है। देशी नस्ल विदेशी नस्ल की तुलना में विभिन्न प्रारूपों में उत्तम है।

- ❖ देशी गायों/बैलों में कूबड होता है, जो कि हल जोतने व कृषि कार्यो में उपयोगी होता है।
- ❖ देशी गायों में गलफड़ा सुविकसित होता है जो कि गर्मी को सहन करने में सहायक होता है।
- ❖ थन छोटे व मध्यम आकार के होते हैं, इसलिए थनैला रोग होने की संभावना कम होती है।
- ❖ यदि थनैला रोग हो भी जाये तो थनों में पायी जानी वाली मेक्रोफेन की वजह से इलाज आसान है।
- ❖ ड्राफ्ट नस्लों में दूध उत्पादन कम होता है, लेकिन चयनित उत्तम गुणवत्ता के आहार से दूध उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।
- ❖ देशी गाय यहाँ के वातावरण के प्रति अनुकूलित है, अतः यह अत्यधिक गर्मी व अत्यधिक सर्दी को सहन कर सकती है।
- ❖ देशी गाय को पालना आर्थिक रूप से सस्ता होता है। ये चारागाहों में चर कर अच्छा उत्पादन दे सकती है। इनको आवास की भी बहुत अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती है।
- ❖ देशी गाय में बीमारियों के प्रति मजबूत प्रतिरक्षा होती है, गलघोंटू, माता आदि से होने वाला आर्थिक नुकसान कम होता है।
- ❖ देशी गाय का दूध तुलनात्मक अधिक पौष्टिक होता है, इसमें पाये जाने वाले कुछ रसायन, खनिज लवण व इन्टरफेरोन्स, हमारी रोग प्रतिरक्षा को बढ़ाते हैं।
- ❖ देशी नस्ल के नर कृषि व ड्राफ्ट के लिए बहुत उपयोगी होते हैं, इनके कार्य करने की क्षमता व अनुकूलनशीलता कृषि व ड्राफ्ट कार्यों के लिए वरदान है। ये हमारे खेतों को जोतने के साथ अपने गोबर व मूत्र से खेत हो उपजाऊ बनाते हैं।
- ❖ देशी गाय के सांस लेने की क्रिया में कुछ मात्रा में ऑक्सीजन निकलती है जो वातावरण के लिए उपयोगी है।
- ❖ देशी गायें जूनोटिक बीमारियों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होती है अतः ट्यूबरकुलोसिस व ब्रुसेलोसिस जैसी घातक बीमारियाँ देशी गायों से मुनष्य में कम फैलती है।
- ❖ देशी गाय वातावरण के प्रति अनुकूलित होती है इसलिए ये कार्बन डाइ–ऑक्साइड, मेथेन, अमोनिया आदि ग्रीन हाउस गैसों का कम उत्सर्जन करती है।
- ❖ देशी गायों से मिलने वाले दूध, दही, घी, मूत्र व गोबर से विभिन्न प्रकार की औषधियाँ बनाई जाती हैं।
- ❖ गौमूत्र की उपयोगिता को देखते हुए, इसे पंचगव्य और पंचमित्रा में मिलाया जाता है।
- ❖ गाँवों में गोबर से बने घरों में सूर्य की अल्ट्रावॉयलेट किरणों से सुरक्षा रहती है।
- ❖ गोबर में पाये जाने वाले जीवाणु प्रोबॉयोटिक का काम करते हैं।

–डॉ. दिनेश जैन एवं डॉ. तारा बोथरा
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

अपने विश्वविद्यालय को जानें

परीक्षा नियंत्रक कार्यालय

परीक्षा नियंत्रक कार्यालय की स्थापना वर्ष 2010 में राजस्थान पशु चिकित्सा और पशुविज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना के समय की गई। इस कार्यालय द्वारा बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच. के राजस्थान के सभी 10 महाविद्यालयों तथा द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा प्रोग्राम के राजस्थान के सभी 69 संस्थाओं में वार्षिक परीक्षाएं आयोजित करवा कर उनका परीक्षा परिणाम घोषित किया जाता है। वर्तमान में बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच. के राजस्थान के सभी महाविद्यालयों में 1082 विद्यार्थी तथा द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम के राजस्थान में 5990 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। परीक्षा नियंत्रक कार्यालय के द्वारा ही पशुचिकित्सा एवं पशुपालन स्नातक और द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा प्रोग्राम के विद्यार्थियों को परीक्षाओं की अंक तालिकाएं, अस्थाई उपाधि प्रमाण पत्र एवं प्रव्रजन प्रमाण पत्र जारी किये जाते है। इसके अलावा परीक्षा नियंत्रक कार्यालय द्वारा स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा एवं स्नातकोत्तर विज्ञान तथा पी.एच.डी. के शैक्षणिक कार्यक्रम के परीक्षा परिणाम एवं उपाधि प्रमाण पत्र एवं प्रव्रजन प्रमाण पत्र भी जारी किये जाते हैं। परीक्षा नियंत्रक कार्यालय द्वारा विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह का आयोजन करवाया जाता है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर का प्रथम दीक्षांत समारोह 16 सितंम्बर 2015 को आयोजित किया गया। जिसमें स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी.एच.डी. की कुल 1127 विद्यार्थियों को डिग्रियों एवं 55 स्वर्ण पदक वितरित किये गये। इस कार्यालय द्वारा विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों (यू.जी., पी.जी., पी.एच.डी और ए.एच.डी.पी.) का नामांकन किया जाता है। परीक्षा नियंत्रक कार्यालय में उपरोक्त सभी कार्यों को सम्पन्न करने के लिये सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध है जिसमें कम्प्यूटर, इन्टरनेट, सभी प्रकार के प्रिन्टर्स, स्कैनर, फोटो कॉपियर, टेलीफोन, इन्टरकॉम, तथा आप्टीमॉइजर की सुविधा शामिल है। कार्यालय के गोपनीय कार्य को देखते हुए इस कार्यालय में जगह–जगह पर सी.सी.टी.वी. कैमरे लगे हुए हैं जिससे प्रत्येक कार्य की सुचारु रुप से निगरानी रखी जा सके। इस कार्यालय द्वारा परीक्षा संबंधी सभी कार्य ऑन–लाईन किये जाते हैं, जिसमें विद्यार्थियों के परीक्षा फार्म भरना, विद्यार्थियों को रोल नम्बर आंवटित करना शामिल है। इसके अलावा विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन भी ओ.एस.ई.एस. (On Screen Evaluation System) द्वारा ही किया जाता है, इसके तहत परीक्षक को छात्रों की उत्तर पुस्तिकाएं एक कोड नम्बर के साथ दी जाती हैं तथा वे उनका मूल्यांकन करके पुनः कोड नम्बर द्वारा ही मूल्यांकन कर भेजते हैं। यह कार्य पूर्ण रुप से गोपनीय बना रहता है। विश्वविद्यालय पूर्णतया ई–गर्वनेन्स मॉड्यूल पर कार्य कर रहा है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जून, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुंहपका एवं खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	दौसा, बाँसवाड़ा, अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, चित्तौड़गढ़
पी.पी.आर. रोग	भेड़, बकरी, ऊँट	सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, जयपुर, हनुमानगढ़, चूरू
बॉटूलिस्म	गौवंश	बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, चूरू
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, कोटा, बारां, भीलवाड़ा
ठप्पा रोग	भैंस,गौवंश	जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, जोधपुर, अलवर
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, झुंझुनू, हनुमानगढ़
न्यूमोनिक–पास्चुरेल्लोसिस	गौवंश, भैंस	जालौर, सिरोही, हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, अलवर, सीकर
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट, गौवंश	धौलपुर, बांसवाडा, हनुमानगढ़, बून्दी, झालावाड, श्रीगंगानगर
पर्ण–कृमि	गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट	श्रीडूंगरगढ़, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर, उदयपुर, भरतपुर, सवाई–माधोपुर
ताप घात व निर्जलीकरण	सभी पशु–पक्षी	समस्त राजस्थान

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अत्यधिक गर्मी का पशुओं के उत्पादन एवं प्रजनन पर प्रभाव

गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं पर अत्यधिक बढ़ते हुए वातावरणीय तापमान के उसके उत्पादन एवं प्रजनन पर बुरे प्रभाव होते हैं। दुधारू गायों एवं भैंसों का सामान्य शारीरिक तापमान 38.8± 0.5° सेन्टीग्रेड (101.5 से 102.5° फेरेन्हाइट) होता है। पशुओं द्वारा गर्मी के मौसम में इस तापमान को बनाए रखने के लिए अनुकूलतम उष्मा क्षय आवश्यक है। पशु के शरीर से उष्मा क्षय में वातावरणीय तापमान, हवा में नमी तथा हवा की गति का महत्वपूर्ण योगदान है। तेज गति की हवा पशु के शरीर से उष्मा क्षय में सहायता करती है जब कि अत्यधिक आर्द्रता पशु के शरीर से उष्मा क्षय में बाधा पहुँचाती है। संकर नस्ल की गायों के लिए एक अनुमान के अनुसार 5° सेन्टीग्रेड से 25° सेन्टीग्रेड तापमान उनके शारीरिक तापमान को बनाए रखने के लिए एवं अनुकूलतम उत्पादन एवं प्रजनन हेतु सर्वोत्तम माना गया है। जब वातावरणीय तापमान 5° सेन्टीग्रेड से नीचे होता है तो पशु अधिक चारा खाता है एवं उसका शरीर इस भोजन से अधिक ऊर्जा पैदा करता है जिसका अधिकतर उपयोग शरीर को गर्म रखने में काम में आता है। अतः पशु की ऊर्जा तापीय विनियमन में अधिक लगती है। पशु की शारीरिक क्रियाएं भी कम हो जाती है। अत्यधिक गर्मी के मौसम में पशुओं का उत्पादन गिर जाता है तथा प्रजनन क्षमता में भी अत्यधिक कमी आती है। गर्मी के दुष्प्रभावों से पशुओं को हीट में आना कमजोर हो जाता है अथवा रूक जाता है तथा पशु आसानी से गर्भित नहीं होता तथा फोराव करता रहता है। अत्यधिक गर्मी के भ्रूण वृद्धि एवं जीवन पर भी दुष्प्रभाव देखे गए है। खास तौर पर भैंसों पर गर्मी का प्रभाव अधिक होता है तथा इस मौसम में अधिकतर भैंसें हीट में नहीं आती अथवा गूंगी पाली में रहती हैं। साथ ही गर्मी का प्रभाव नर पशुओं पर भी पड़ता है तथा उनके वीर्य की गुणवत्ता कम हो जाती है। गर्मी में यदि पशु का शरीर शारीरिक तापमान बनाए रखने में विफल हो जाता है तो उसे तापघात कहते हैं एवं ऐसी स्थिति में उसका शारीरिक तापमान बढ़ जाता है तथा दूध असामान्य रूप से घट जाता है एवं पशु बीमार हो जाता है। ज्यादा दूध उत्पादन करने वाले पशु अधिक उष्मा पैदा करते हैं अतः वे तापघात से अधिक प्रभावित होते हैं। तापघात की स्थिति में पशु सुस्त हो जाता है एवं बैठा रहता है। खड़े पशु अपना सिर नीचा रखते हैं। पशु मुँह खोल के सांस लेता है तथा मुँह से लार गिरती है। पशु की सांस की गति एवं तापमान बढ़ जाता है। पशुओं का दूध उत्पादन कम हो जाता है तथा पेशाब की मात्रा में कमी आ जाती है। अत्यधिक तापघात की स्थिति में पशु की मृत्यु हो जाती है।

कैसे बचाएं पशुओं को गर्मी से

- ❖ पशुओं को सुपाच्य एवं अधिक ऊर्जा घनत्व वाली सामग्री जैसे चाटा अधिक खिलाना चाहिए।
- ❖ पशुओं को कुल चारे एवं चाटे को 60 प्रतिशत रात्रि 8 बजे से सुबह 8 बजे के बीच में देना चाहिए ताकि वह दिन की गर्मी में कम भोजन करें तथा कम ऊर्जा पैदा करें।
- ❖ हरा चारा यदि उपलब्ध हो तो जरूर देना चाहिए लेकिन वह सड़ा गला ना हो।
- ❖ विटामिन सी, ए व ई एवं जिन्क चाटे के साथ मिनरल मिक्सचर के रूप में देवें।
- ❖ नमक पशु के ठाण में रखें।
- ❖ पीने का पानी उचित मात्रा में उपलब्ध होना आवश्यक है जो कि पशु से 250 मीटर से अधिक की दूरी पर ना हो तथा अत्यधिक गर्म ना हो।
- ❖ पशु शाला में तापमान नियंत्रण हेतु पशु शाला के आस पास पेड़ लगाएं।
- ❖ पशु शाला का हवादार होना अति आवश्यक है। तापघात का सर्वाधिक असर अधिक आर्द्रता में होता है। अतः आंशिक रूप से पशु शाला का खुला होना आवश्यक है। 60 प्रतिशत से अधिक आर्द्रता में 36° सेन्टीग्रेड तापमान पर ही तापघात होने का अंदेशा रहता है।
- ❖ पशु शाला में फव्वारे एवं पंखों से तापमान नियंत्रित किया जा सकता है। कूलर का उपयोग भी कम आर्द्रता की स्थिति में ही फायदेमंद है।
- ❖ पशुओं को दोनों समय नहलाना फायदेमंद रहता है।
- ❖ भैंसों के लिए छोटे पानी के तालाब जिसमें दिन के समय भैंस बैठी रहे फायदेमंद है।

प्रो. जी. एन. पुरोहित
पशु मादा एवं प्रसूति रोग विभाग, वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर

गर्मियों में पशुओं को निर्जलीकरण से बचायें

पशुपालक भाईयों! इस वर्ष अन्य विगत वर्षो की तुलना में गर्मी का प्रकोप बहुत अधिक है जिससे जन–जीवन प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो रहा है और इससे पशु–पक्षी भी अछूते नहीं हैं। वातावरण में अत्याधिक तापमान होने से पशुओं में निर्जलीकरण एक आम समस्या है। शरीर में पानी की कमी को ही निर्जलीकरण या अंग्रेजी भाषा में डीहाइड्रेशन कहते हैं। निर्जलीकरण से प्रभावित पशु सुस्त हो जाता है, उसे बुखार हो सकता है, आंखें धस जाती है, नाक व नथुने सूख जाते हैं, मसूड़े सूख जाते हैं और पीले पड़ जाते है, पेशाब कम करने लगता है व पेशाब में बदबू आने लगती है। पशु चरना बंद कर देता है और दुधारू पशु का उत्पादन कम हो जाता है। पशु की चमड़ी सूखी व झुरीदार हो जाती है। यदि निर्जलीकरण से प्रभावित पशु की सही समय पर सही तरीके से देखभाल नहीं की जाये तो निर्जलीकरण पशु के लिए जानलेवा साबित हो सकता है, विशेष रूप से बछड़े–बछड़ियों के लिए ज्यादा घातक होता है। पशुपालक भाईयों को चाहिए कि पशु को निर्जलीकरण की समस्या से बचाने के लिए निम्न उपाय करें:–

- ❖ पशु को छायादार स्थान पर बांधें।
- ❖ पशु को लू से बचायें।
- ❖ पर्याप्त मात्रा में पीने का स्वच्छ व ठंडा पानी उपलब्ध करायें।
- ❖ भैंसों को विशेष रूप से दिन में कम से कम एक बार नहलाने का प्रबंध करें।
- ❖ प्रभावित पशु को गीले कपड़े से पोंछे। विशेषकर नथुने, मुंह, आंख एवं सिर को गीला करें।
- ❖ पशु में निर्जलीकरण ज्यादा होने पर उपचार के लिए तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने स्वदेशी भैंस वंश को पहचानें > मुर्रा भैंस –गौरव देश का

दूध, दही की नदियां बहाने वाले भारत देश में आज भी दूध का भरपूर उत्पादन हो रहा है और हम दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर हैं। इसके पीछे जहां दुधारू गाय महत्वपूर्ण है वहीं भैंस का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। गौरव की बात है कि भैंस की अधिक दुधारू नस्लें हमारे देश में ही पाई जाती हैं। भारत में पायी जाने वाली मुर्रा भैंस विश्व में भैंसों की नस्लों में सबसे ज्यादा दूध देने वाली नस्ल है। इन भैंसों का प्रजनन क्षेत्र हरियाणा के जिंद व आस–पास हिसार, झंझर, फतेहाबाद, गुरूग्राम, रोहतक, सोनीपत व पानीपत जिले है। राजस्थान में श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू व झुंझुनूं जिलों में भी पशुपालक मुर्रा नस्ल की भैंसों को बहुतायत से रखते है। इस नस्ल में औसत दूध उत्पादन 2000 से 2500 किलो तक प्रति श्रवण काल होता है। इस नस्ल के वयस्क नर 550 किलो तथा मादा 450 किलो शारीरिक भार की होती है। इस नस्ल के भैंसों तथा उनके हिमीकृत वीर्य का भैंस नस्ल उन्नयन के लिए विदेशों में निर्यात भी किया जाता है। इटली, बुल्गारिया, मिश्र तथा वियतनाम में भारतीय मुर्रा भैंस से इन देशों की स्थानीय भैंसों का उन्नयन किया गया है। मजबूती से गोलाकार अन्दर की तरफ मुड़े हुए सींगों के कारण ही इस भैंस नस्ल का नाम मुर्रा है। इस नस्ल का शरीर भारी होता है। सिर छोटा, चेहरा (नासिका छिद्रों से आंखों तक) लम्बा, गर्दन भी लम्बी व रंग गहरा काला होता है। पैरों के फेटलोक जोड़ तक पहुंचती हुई लम्बी पूंछ होती है जिसमें अन्त में बालों का गुच्छा 8 इंच तक का हो सकता है। इनके सींग दूसरी नस्लों से अलग होते हैं। चपटे, छोटे, मजबूती से पीछे व ऊपर की तरफ उठे हुए तथा अन्त में अन्दर की तरफ गोल मुड़े हुए होते है। पैर मजबूत व छोटे होते हैं। चमड़ी मुलायम, कम बाल वाली एवं गहरे काले रंग की होती है। प्रथम ब्यांत की उम्र 4 वर्ष पायी जाती है लेकिन अच्छे फार्मों में 3 वर्ष तक भी देखी गयी है। ब्यांत का अन्तराल 400 से 500 दिन का होता है। दुग्ध का श्रवण काल औसतन 300 दिन का होता है। शुष्क काल तीन महीने का होता है। मुर्रा भैंस में औसत 310 दिन का गर्भकाल होता है।

सफलता की कहानी — नौकरी छोड़ जयप्रकाश ने अपनाया डेयरी व्यवसाय

चूरू जिले में रतनगढ़ तहसील के जयप्रकाश पुत्र श्री देवकरण माली ने अपनी पढ़ाई (एम.बी.ए.) पूरी करने के पश्चात एक निजी कम्पनी में मैनेजर के पद पर कार्य प्रारम्भ किया। कम्पनी में इन्होंनें सात साल तक कार्य किया लेकिन उनका रूझान हमेशा डेयरी व्यवसाय की तरफ रहा। वर्ष 2014 में इन्होंने नौकरी छोड़कर डेयरी व्यवसाय को अपनाया और 8 गायों से डेयरी व्यवसाय की शुरूआत की लेकिन कुछ समय पश्चात ही चार गायें बीमार हो गई। फिर इन्होनें चार गायें और खरीदी परन्तु कुछ समय पश्चात तीन गायें फिर बीमार हो गई और जयप्रकाश को इसका कारण समझ में नहीं आया। इसी दौरान जयप्रकाश वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू केन्द्र के सम्पर्क में आए जहां उन्हें बीमारी का कारण पता चला। यहां के प्रभारी अधिकारी ने जांच करके बताया कि पशुओं के बाड़े में और पशुओं में बाह्य परजीवियों की संख्या बहुत अधिक है। इसके पश्चात प्रभारी अधिकारी की सलाह पर बीमार पशुओं के रक्त के नमूने जांच हेतु वी.यू.टी.आर.सी. केन्द्र पर भेजे। जांच करने के पश्चात सामने आया कि ये सभी पशु थैलेरियोसिस बीमारी से ग्रसित हैं। वी.यू.टी.आर.सी की सलाह पर इन बीमार पशुओं का उपचार करवाया गया। वी.यू.टी.आर.सी चूरू द्वारा समय–समय पर दिये प्रशिक्षणों से जयप्रकाश को काफी फायदा हुआ। इसके अलावा जयप्रकाश ने अपने पशुओं के दूध को बढ़ाने हेतु वी.यू.टी.आर.सी. चूरू से सन्तुलित पशु आहार, पशु आहार से खनिज लवणों व विटामिन की उपयोगिता, टीकाकरण व कृमिनाशक के बारे में प्रशिक्षण और जानकारी प्राप्त की। आज जयप्रकाश के पास 10 दुधारू गाये हैं जिनसे लगभग 90 लीटर दूध का उत्पादन प्रतिदिन ले रहे हैं। जयप्रकाश ने बताया कि वे अपना दूध मिठाई की दुकानों व सरस डेयरी को बिक्री करते हैं और इस व्यवसाय से उन्हें प्रतिमाह अच्छी आय प्राप्त हो रही है। डेयरी व्यवसाय की वजह से आज इनकी प्रतिष्ठा में चार चांद लगे हैं। वे बेरोजगार युवाओं के लिए वे एक प्रेरणा के स्त्रोत बन गये हैं।

सम्पर्क– जयप्रकाश, रतनगढ़ (मो. 8432803992)

निदेशक की कलम से...

स्वदेशी गौवंश की महत्ता सदैव रहेगी

भारत विश्व के 17 महान जैव विविधता वाले क्षेत्रों में से एक है जहां विश्व की कई प्रजातियां पाई जाती हैं। भारत में अनेक उच्च–कोटि की गौवंश नस्लें मिलती है जो दूध देने के साथ बोझा ढ़ोने के काम में भी आती है। राजस्थान प्रदेश पशु आनुवांशिक संसाधनों का एक विशाल स्त्रोत है, जहां देशी गौवंश की विविध नस्लें पाई जाती है। देश की 90 प्रतिशत गौवंश नस्लें राजस्थान में पाई जाती हैं। यहां मूल्यवान देशी गौवंश की विभिन्न नस्लों का विकास स्थानीय कृषि, जलवायु और लोगों की आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप पीढ़ी दर पीढ़ी हुआ है। राज्य की सभी छः गौ नस्लें यथा– राठी, थारपारकर, कांकरेज, गिर, साहीवाल और मालवी पशु आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरों से मान्य है। विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों में पाया गया है कि देशी गौवंश का दूध व उससे बने उत्पादों से मानव शरीर में कोई रोग नहीं होता। गाय का दूध जितना सात्विक दूध किसी भी ओर पशु का नहीं होता। यह दूध ए–2 श्रेणी का माना जाता है क्योंकि इसके पाचन के दौरान हानिकारक तत्व बीटा कैसो मार्फिन–7 (बी.सी.एम.–7) उत्पन्न नहीं होता है। भारत की श्रेष्ठतम दुधारू नस्लों में ए–2 जीन की उपस्थिति शत–प्रतिशत तक पाई गई है। गौवंश के दूध से लेकर मूत्र तक को औषधीय गुणों से युक्त माना जाता है। गाय से दूध, दही, घी, गौ मूत्र और गोबर (पंचगव्य) मनुष्य के लिए जीवन पर्यन्त उपयोगी हैं। उपनिषदों में कहा गया है – ''गोमय वसते लक्ष्मी'' यानि की गौवंश में धन व समृद्धि की देवी लक्ष्मी का वास है। गाय के दूध व घी का सेवन करने वाला व्यक्ति दीर्घायु होता है। गौमूत्र से बनने वाली दवाओं का उपयोग विभिन्न बीमारियों और व्याधियों में किया जाता है। गौ मूत्र और गोबर प्रदूषण को दूर करने में सर्वाधिक उपयुक्त माने गए हैं। अतः देशी गाय का लालन–पालन हमारे घर–परिवार के लिए अंत्यत लाभकारी है। **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **जून, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.स.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	डॉ. दीपिका गोकलानी 9413684447 पशु औषधि विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	गर्मियों में पशुओं को तापघात से कैसे बचाएं	02.06.2016
2	डॉ. नीरज कुमार शर्मा 7023556259 पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुपालन के क्षेत्र में विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं	09.06.2016
3	डॉ. रजनी अरोड़ा 9414080359 पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	गर्मी के मौसम में डेयरी पशु प्रबंधन	16.06.2016
4	डॉ. अमित कुमार पाण्डे 9928895313 पशु जैव रसायन विभाग, सी.वी.ए.एस्र., बीकानेर	खुरपका एवं मुंहपका रोग लक्षण एवं निवारण	23.06.2016
5	प्रो. एस. के. कश्यप अधिष्ठाता छात्र कल्याण, राजुवास, बीकानेर	पशुपालन में जैव तकनीकी के आयाम	30.06.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया